Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-06
International Conference on Indigenous Languages and Translation Studies
held on Saturday, 3rd August 2019
Venue- Seminar Hall, School of Humanities and Social Sciences, Jain Deemed-to-be-University, Palace Road, Bengaluru, India

Hindi Translation, Transliteration And Analytical Study Of Punjabi Folk Literature (With Special Reference To The Folklore Of Resistance)

Dr. Harpreet Kaur
Assistant Professor
Department of Translation Studies
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidhyalya,Wardha Maharashtra
dr.harpreetkaurr@gmail.com
9158197303

Introduction: In this paper Hindi translation and analysis of Punjabi folk songs of resistance has been done. while compiling, transliterating, analyzing folk songs, this research is divided into two parts. The limitation of this research is that as the folklore of resistance is concerned, only those folk songs are included as material in which the tone of resistance is visible. Among the Punjabi folk songs, most folk songs are related to the prosperity, farm-barn, relationship etc. of Punjab. Folk songs related to love are also found in a considerable amount in stories-poems, among which Sohni-Mahiwal, Sassi-Punnu, Heer-Ranjha, Sahiban-Mirza etc. are prominent. There is some resistance even in these love poems. But not in the whole song, in this case, there was a research question as to whether these love poems should be made part of this research or not. Because these stories are poetic and the narrative is entirely based on love and dedication. A few characters show resistance in very few words, but immediately after resistance, their dedication is also visible. This is the reason that these anecdotes-poem are not included in this research by the researcher.

In this research, an attempt has been made by the researcher to include all the folklore in which poignant voices of resistance are heard. The folklore of resistance to the administrative and political system, the folklore of resistance to the Mughals, the folklore of resistance to the British, folk poetry related to folk heroes, folklore related to Gandhi, folklore related to Bhagat Singh, Folklore related to Dalit castes in Punjab and their social, economic , political condition or behavior of upper castes towards them and Folklore of resistance of Dalits , Folklore related to women's resistance, folklore related to the migration of husband, Folklore related to Alcohol Prohibition, unemployment, Farming etc. Researcher has attempted to make all these subjects part of her research.

The biggest problem that came to the fore in the initial work of selecting or compiling material of folklore was that not much material was available in this regard, so an attempt has been made to complete this research on the basis of available folklore. The sharp tone of resistance is seen in all the folk songs taken under this research.
keywords : Culture,residence content, Folklore, poetic, resistance, migration, administrative and political system, anecdotes-poem,unemployment, Farming,transliterating.
Research Objective:·

- Compiling and analyzing resistance folk songs.
- Hindi translation and analysis of Punjabi folk songs.

Research Hypothesis / Basic Question:

- How does the influence of the strong expression of the folk is reflected in the society?
- How does the voice of resistance expressed through folk appear in Punjabi?Foreign invaders attacked Hindustan through Punjab. In such a situation, the people of Punjab had to fight these invasions, other states later came in the grip of it. Due to this incident, enthusiasm and militancy is more visible in the lifestyle of Punjabis. The form of this intervention of the invaders, answered through folk, is poignant and energetic together. They not only dare the invaders to leave India, but also have the power to chase them, so there is a sharpness in their voice which comes after the constant struggle. Analysis of the same sharpness or charismatic melody of language has been a challenging question of this research work. Along with this, in the women society, Dalit society, the tone of retaliation which has been seen for a long time has emerged in the form of folk songs. An attempt to find an answer to this question has also been made in the presented research.

Research Methodology: Following research methods have been used in the presented research: Sampling method, content analysis, comparative study method, analytical method. In the proposed research, the primary data and references have been collected using the sampling method.

Introduction to research field: Punjabi folklore, which is related to the culture of resistance, etc. comes under the field of this research.

पंजाबी लोकसाहित्य का हिंदी अनुवाद, लिप्यंतरणऔर विश्लेषणात्मक अध्ययन

(प्रतिरोधके लोकसाहित्य के विशेष संदर्भ में)

भूमिका: प्रस्तुत शोधपत्र में प्रतिरोध के पंजाबी लोकगीतों का हिंदी अनुवाद,लिप्यंतरण और विश्लेषण किया गया है। जिसके अंतर्गत लोकगीतों का संकलन, लिप्यंतरण, विश्लेषण करते हुए इस शोध को दो हिस्सों में बांटा गया है। इस शोध की सीमा क्योंकि प्रतिरोध संबंधी लोकगीत हैं इसलिए सामग्री के रूप में केवल उन्हीं लोकगीतों को शामिल किया गया है, जिनमें प्रतिरोध का स्वर दिखाई देता है। पंजाबी लोकगीतों में सबसे अधिक लोकगीत पंजाब की खुशहाली, खेत-खलिहान, रिश्ते-नाते आदि से संबंधित हैं। प्रेम से संबंधित लोकगीत भी पर्याप्त मात्रा में कथा-काव्यों के रूप में मिलते हैं, जिनमें सोहणी-महिवाल, सस्सी-पुन्नू, हीर-रांझा, साहिबां-मिर्जा आदि प्रमुख हैं। इन प्रेम काव्यों में भी थोड़ा-बहुत विरोध तो दिखाई देता है। लेकिन पूरे गीत में नहीं ऐसे में यह भी शोध प्रश्न सामने था कि फिर इन प्रेम काव्यों को इस शोध का हिस्सा बनाया जाए अथवा नहीं। क्योंकि ये कथा काव्य हैं और कथा पूर्णत: प्रेम और समर्पण पर आधारित है। किसी एकाध पात्र का बहुत कम शब्दों में प्रतिरोध

दिखाई देता है लेकिन प्रतिरोध के तुरंत बाद उसका समर्पण भी दिखाई देता है। यही कारण है कि शोधकर्ता द्वारा इस शोध में इन किस्सा काव्यों को शामिल नहीं किया है।

इस शोध में शोधकर्ता द्वारा उन सभी लोकगीतों को शामिल करने का प्रयास किया गया है, जिनमें प्रतिरोध के तीखे स्वर सुनाई देते हैं। प्रशासनिक और राजनीतिक व्यवस्था के प्रति प्रतिरोध का लोककाव्य, मुगलों के प्रति प्रतिरोध का लोककाव्य, अंग्रेजों के प्रति प्रतिरोध का लोककाव्य, लोकनायकों से संबंधित लोक काव्य, गांधी से संबंधित लोकगीत, भगत सिंह से संबंधित लोकगीत, पंजाब में दलित जातियां और उनकी सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक स्थिति अथवा सवर्ण जातियों का उनके प्रति व्यवहार से संबंध लोकगीत एंव दलितों के प्रतिरोध का लोककाव्य, स्त्रियों के प्रतिरोध संबंधी लोकगीत, पति के प्रवासन (विदेश गमन) से संबंधित लोक गीत, शराबबंदी, बेरोजगारी, किसानी आदि से संबंधी लोकगीत। इन सभी विषयों से संबंधित लोकगीतों को शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत शोध का हिस्सा बनाने का प्रयास किया गया है।

लोकगीतों के चयन अथवा सामग्री संकलन का शुरुआती कार्य करते हुए सबसे बड़ी समस्या जो सामने आई वह यह थी कि इसके संबंध में बहुत अधिक सामग्री प्राप्त नहीं हुई, ऐसे में उपलब्ध लोकगीतों के आधार पर इस शोध को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है। इस शोध के अंतर्गत जितने लोकगीत लिए गए हैं सबमें प्रतिरोध का तीखा स्वर दिखाई देता है।

शोध उद्देश्य :

- प्रतिरोध संबंधी लोकगीतों का संकलन और विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- पंजाबी लोकगीतों का हिंदी लिप्यंतरण व विश्लेषण।

शोध उपकल्पना /आधारभूत प्रश्न :

- लोक की सशक्त अभिव्यक्ति का प्रभाव समाज में किस रूप में दिखाई पड़ता है ?
- लोक के माध्यम से अभिव्यक्त प्रतिरोध का स्वर पंजाबी में किस रूप में दिखाई पड़ता है ?

विदेशी आक्रमणकारी पंजाब के रास्ते से हिन्दुस्तान पर आक्रमण करते थे। ऐसे में पंजाब के लोगों को इस आक्रमण से दो चार होना पड़ता था, दूसरे सूबे बाद में इसकी चपेट में आते थे। इसी घटना के चलते पंजाबियों की जीवन शैली में जोश और जुझारूपन अधिक दिखाई देता है। आक्रमणकारियों के इस हस्तक्षेप का उत्तर लोक के माध्यम से जिस रूप में किया गया, वह मार्मिक और जोशीला एक साथ है। वे आक्रमणकारियों को भारत छोड़ने के लिए ललकारते ही नहीं बल्कि खदेड़ने का दम भी रखते हैं इसलिए उनके स्वर में एक तीखापन है जो लगातार संघर्ष के बाद आता है। उसी तीखेपन अथवा भाषा के विलक्षण सोंदर्य का विश्लेष्ण इस शोध कार्य का चुनौतीपूर्ण प्रश्न रहा है। इसके साथ ही स्त्री समाज, दलित समाज के शब्दों में प्रतिकार का जो स्वर लंबे समय से दिखाई देता है वह लोकगीतों में किस रूप में उभर कर सामने आया है? इस प्रश्न का उत्तर तलाशने का प्रयास भी प्रस्तुत शोध में किया गया है।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध आलेख में निम्नलिखित शोध प्रविधियां प्रयुक्त की गई हैं-

निदर्शन पद्धति, अंतर्वस्तु विश्लेषण, तुलनात्मक अध्ययन प्रविधि, विश्लेष्णात्मक प्रविधि। प्रस्तावित शोध में प्राथमिक आंकड़ों और संदर्भों का संग्रहण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया है।

शोध क्षेत्र का परिचय: पंजाबी लोककाव्य जिनका संबंध प्रतिरोध की संस्कृति से है आदि इस शोध की विषय सीमा के अंतर्गत आते हैं।

शोध आलेख : जब भी कोई लोक बोल, लोक कथ्य, लोककाव्य अस्तित्व में आता है तो एक नया सभ्याचार, संस्कृति और जीवन शैली भी अस्तित्व में आती है। इस जीवन शैली और सभ्याचार की झलक हम उस बोली के लोकगीतों में स्पष्ट रूप से देखते हैं। इस दृष्टि से पंजाबी बोलियाँ (लोक कथन) पूरी तरह समृद्ध हैं।डॉ.मोहिंद्र सिंह बेदी के अनुसार "लोकधारा किसी जाति के विरसे का वह सच है,जिसके गहरे अध्ययन के बिना,कदम से कदम मिलाकर चलना,हर संस्कृति व्यवहार,वस्तु और सोच विचार में अपना प्रतिबिंब प्रतिलक्षित

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-06
International Conference on Indigenous Languages and Translation Studies
held on Saturday, 3rd August 2019
Venue- Seminar Hall, School of Humanities and Social Sciences, Jain Deemed-to-be-University, Palace Road, Bengaluru, India

करती है।लोकधारा भले जीवन सेकितनी हीविलक्षण और अद्भुत ही,कितनी ही अविश्वसनीय अथवा काल्पनिक हो,जातिगत मानसिकता पर ही आधारित होती है।जो लोक मन की प्रवृतियों से शक्ति ग्रहण करती है।"[1]

पंजाब के भौगोलिक क्षेत्रफल में रहने वाले लोगों की जीवनशैली को हम इन बोलियों, टप्पों के माध्यम से बखूबी समझ सकते हैं। इन लोक गीतों में यहाँ एक तरफ जिंदगी के प्रति हुलास्स है, उत्साह है, उम्मीद है, जश्न है तो वहीं कुछ पक्षों के प्रति रोष भी है। यह रोष कभी धीमे स्वर में तो कभी तीखे स्वर में समय-समय पर दिखाई देता है। भौगौलिक कारणों से भारत में पंजाबी दूसरे राज्यों के लोगों से अधिक समृद्ध रहे हैं। यही कारण है कि जब हम पंजाबी लोकधारा का अध्ययन करते हैं तो ऐसे कई प्रमाण मिलते हैं जिनके माध्यम से हम कह सकते हैं कि ये अपने अस्तित्व की लड़ाई में दूसरों से अधिक सचेत रहे। पंजाब की आर्थिक खुशहाली ही विदेशियों के पंजाब पर हमले का आकर्षण भी रही।

इन विदेशी हमालावरों के प्रति प्रतिरोध के चलते ही पंजाबी लोकधारा के साहित्य में विद्रोह के स्वरों ने प्रवेश किया। समय के साथ-साथ लोक के माध्यम से यह प्रतिरोध की संस्कृति अधिक स्पष्टता के साथ मुखर होने लगी और इसी तरह विद्रोह का यह स्वर लोकधारा में स्थाई भाव की तरह स्थापित हो गया। जब अहमद शाह अब्दाली ने पंजाब पर एकाधिक हमले किये, तब पंजाबियों में यह अखाण[2] प्रचलित हो गया कि,

खाधा पीता लाहे दा,

बाकी अहमद शाहे दा

(हम जो खा पी रहे हैं केवल वही अपना है, बाकी सब अहमद शाह लूटकर ले जाएगा)

इस तथ्य से स्पष्ट है कि विदेशी हमलावरों के प्रति पंजाबियों का क्या नजरिया था। इसी तरह जब मुग़ल सल्तनत का सूबेदार मीर मनु पंजाबियों पर जुल्म कर रहा था तो यह जुमला पंजाबियों की जुबान पर आम था।

मनु साडी दातरी, असीं मनु दे सोये

ज्यों-ज्यों मनु बढ्दा, असीं दूण सवाये होए।

---

[1]कौरबेअंत,लोकधारा,परंपरा और सभ्याचार के बदलते परिप्रेक्ष्य,□ □.□ □11

[2]मुहावरे का ही एक रूप है

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-06
International Conference on Indigenous Languages and Translation Studies
held on Saturday, 3rd August 2019
Venue- Seminar Hall, **School of Humanities and Social Sciences**, Jain Deemed-to-be-University, Palace Road, Bengaluru, India

(मीर मनु अपने ज़ुल्मों से जितना हमें ख़तम करने का प्रयास कर रहा है हम उसके सामने उतनी ही बढ़ी हुयी संख्या में डटकर खड़े हो रहे हैं। मारकर वह हमारी संख्या को कम नहीं कर सकता।)

इसी तरह राजों ,नबाबों और निज़ाम की शासन प्रणाली का जिक्र पंजाबी लोकगीतों में मिलता है।

जैसे –

नौकरशाही डैणें नीं

बूहे जेलां दे खोल

असां जाणां शताबी

आपणे बीरां दे कोल

(भावार्थ: जब भारत में अंग्रेजी हुकूमत कायम हुयी तो इन्हीं लोक बोलियों में विरोध का स्वर और तेज हो गया। इस समय बहुत सारे अखाण, लोककाव्य और मुहावरे अस्तित्व में आये न सिर्फ अस्तित्व में आये बल्कि उन्हें गाने का प्रचलन भी तेजी से बढ़ता दिखाई देता है। इसी दौर में ही पंजाब में आधुनिक साहित्य की शुरुआत हुई। लेखकों ने व्यक्तिगत स्तर पर बदलाव का साहित्य लिखा। बदलाव के इस साहित्य का लोकधारा के साहित्य पर भी स्पष्ट असर दिखाई देता है। इस दौर के लोकधारा साहित्य में सियासी चेतना दिखाई देती है। आम तौर पर ही कुछ बोलियाँ प्रसिद्ध हो गयीं।)

कंघी कंघी कंघी

भारत देश असाडा

असां रहण नहीं देने फिरंगी

(कंघी-कंघी/ भारत हमारा है हम रहने नहीं देंगे फिरंगी)

इसी दौर में बहुत सी समाज सुधारक लहरों का जन्म हुआ। इन्हीं लहरों ने आगे चलकर लोक साहित्य को भी प्रभावित किया ।

जैसे : गांधी जी से प्रभावित लोक बोली

साड़ा देश अमर रहेगा

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-06
International Conference on Indigenous Languages and Translation Studies
held on Saturday, 3rd August 2019
Venue- Seminar Hall, **School of Humanities and Social Sciences**, Jain Deemed-to-be-University, Palace Road, Bengaluru, India

फिरगीयां जाणा ऊत

चरखा लिया दे वे

मैं कतूंगी सूत

(हमारा देश अमर रहेगा/ फिरंगी बापिस लौट जायेंगे/ मैं चरखा कातूंगी मुझे सूत लाकर दे दो)

गांधी का प्रभाव लोकगीतों और बोलियों पर पड़ा। ऐसे लोककाव्य में यहाँ प्रतिरोध की सामूहिक चेतना स्पष्ट झलकती है। वहीं यह चेतना इस रूप में भी उजागर होती है कि पंजाब के लेखकों द्वारा अपने लोक नायकों को लेकर लोककाव्य की रचना की गयी। दुल्ला भट्टी वाला इसी का एक उदाहरण है इसके अलावा जग्गा जट आदि के बारे में लिखे गए लोककाव्य इसी श्रेणी के अंतर्गत आते हैं।

जग्गा जट ना किसे ने बण जाणा

घर-घर पुत्त जंमदे

(हर घर में बेटे जन्म लेते हैं लेकिन जग्गा जट जैसा कोई पैदा नहीं हो सकता)

इस तरह इस श्रेणी में मिरजा-साहीबा, हीर-रांझा और सोहनी-महीवाल से जुड़े लोककाव्य और टप्पे भी शामिल किये जा सकते हैं। अन्तर यह है कि दुल्ला भट्टी, जिऊणा मोड़ और जग्गा जट के सरोकार राजनैतिक थे जबकि साहिबा-मिरजा, सस्सी-पुन्नु, हीर-रांझा के सरोकार सामाजिक थे। माना जाता है कि मिरजे के मरने के बाद पंजाबी लोकगीतों में 'हेक' (लंबा स्वर) का रिवाज शुरू हुआ। हालांकि यह तथ्य विवादास्पद है।

एक काव्य रूप -

जे तैनूं जाच नहीं औंदी मरण दी

किते काग देण सिखला

सिर दा लीड़ा लाह के

इथे जंड नाल ला फ़ाह

आख्या मन लै कमलिये मेरा

छड्ड चंदडा दा चा

कित्ते पहुँच हवाले रब्ब दे।

इन लोककाव्यों में विशेष तौर पर रेखांकित करने वाला तथ्य यह है कि इन लोकगीतों में विरसे को और इसके रूप को कायम रखने का काम पुरुष समाज की अपेक्षा औरतों ने अधिक किया है। इन लोक गीतों के पीछे स्त्री अभिव्यक्ति के दबे स्वर ही हैं। जिन्हें वह सामाजिक कर्मकांडों विवाह, तीयां (सावन के मौसम में गाँव की लडकियां नहर के किनारे नाचती थीं एंव झूले झूलती थीं) आदि त्योहारों पर लोककाव्य और बोलियों में प्रकट करती है। इसी अभिव्यक्ति में प्रतिरोध का स्वर पितृ समाज के अत्याचारों के समक्ष समानांतर चलता रहता है।

बारीं-बरसीं खटण गिओं

ते खट के लियांदी डोई

सारी गड्डी मोड़ बाबला

मेरे हाण दा मुंडा ना कोई

(बारीं बरसीं खटण गओ (लोक बोल की तर्ज) खरीदने के लिए गया और खरीद कर लाया डोई/ बाबला (पिता) गाड़ी बापिस भेज दे/ इसमें मेरे उम्र का एक भी लड़का नहीं है।) पंजाब से प्रवासन का लंबा इतिहास रहा है। जिस प्रकार भोजपुरी लोक में विदेसिया प्रचलित है वैसे ही पंजाबी लोकगीतों में प्रवासन को लेकर अनेक लोककाव्य दिखाई देते हैं जिनमें स्त्रियाँ अपने पति से विदेश न जाने के लिए की विनती करती हैं।

जैसे -

जेठ घोड़ा हेठ

धुपां पैण बलाई

दंमां देआ लोभीया वे

परदेस नां जाईं

कतूंगी बरीक

घर बैठ के हंडाईं

(भावार्थ-पैसों के लालच में विदेश मत जाना/सूत कातकर मैं कमाई कर लूंगी)

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-06
International Conference on Indigenous Languages and Translation Studies
held on Saturday, 3rd August 2019
Venue- Seminar Hall, **School of Humanities and Social Sciences**, Jain Deemed-to-be-University, Palace Road, Bengaluru, India

ऐड़ा जुल्म पिता ने कीत्ता

मेरा वर बुड्डडे नाल लाइआ

हाई छाबा

(मेरे पिता ने मुझ पर जुल्म किया मेरा विवाह बूढ़े से कर दिया)

पंजाबी लोक गीतों के इस सफ़र को लोककाव्य के हवाले से हम कह सकते हैं कि लोकगीतों का सफ़र ऐसा रहा जैसे

दो पैर घट तुरना

पर तुरना मटक दे नाल

(चलना दो ही पैर है पर चलना है नजाकत (मटक) के साथ)

आधुनिक समय में लोकगीतों की रचना में विराम आ गया है। पर कुछ लोग लोकगीतों की तर्ज पर साहित्य लिख रहे हैं। हम उसे भले ही लोक साहित्य न कह सकें पर वह लोक के काफी नजदीक जरूर है और उन सवालों के उत्तर भी इन लोकगीतों में है जिन्हें पुरानी परंपरा के लोकसाहित्य में फतवे की तरह जारी किया जाता रहा है।

जैसे अवतार सिंह पाश द्वारा लिखी गई लगभग बोलियों में तात्कालिक व्यवस्था की खिलाफत दिखाई देती है। वैसे हाल फिलहाल के इस साहित्य में बख्श संघा और जगसीर जिदा द्वारा लिखी जा रही लोक बोलियाँ इसी श्रेणी में आते हैं-

जगसीर जीदा

बंदे मारण नूं बनाईआं मिज़ाइलां

नरमें दी सूंडी न मरी

(आदमी को मारने के लिए सरकार ने मिसाइलें बना लीं पर किसान के खेत में उगे नरमे के कीट मारने में सरकारें नाकाम हो गई)

बक्श-

न कोई बलिये डाका मारया

न कोई कीती चोरी

न ही किसे गरीब दे उत्ते

कित्ती धीगोजोरी

केहड़ी गल दी सजा ऐ मिल गयी

जेलीं धक्क्या जोरीं

(मैंने न कोई डाका डाला/ न चोरी की/ ना ही किसी गरी पर जुल्म किया/ फिर किस बात की सजा मिली है/ की जबरदस्ती जेल में डाल दिया गया है)

इंदिरा गांधी के समय में प्रचलित एक लोक बोली-

इंदरा, इंदरा, इंदरा

गरीबी नहीं हटदी

लगया खजाने जिंदरा

इस तरह प्रतिरोध की संस्कृति पंजाबी लोक साहित्य में दिखाई देती है साथ ही साथ सूक्ति वाक्यों की तरह स्त्री विरोधी लोकगीतों पर भी स्त्रियाँ थिरकती दिखाई देती हैं। यह विरोधाभास हर संस्कृति के साथ जुडा हुआ है। पंजाबी में भी इस मौखिक परंपरा का भरा-पूरा इतिहास है।

“पंजाबी लोक गीतों का ही एक रूप सिठणीयां है ‘सिठ’ का अर्थ है व्यंग्य परन्तु विवाह में गई जाने वाली सिठणियों का आधार गाली है। इसी के कारण कई जगहों पर इसे गाली ही कहा जाता है। कोई भी समाज कितना ही दबाव वाला क्यों न हो, वह दबे हुए लोगों को कुछ देर के लिए खुला छोड़कर अपनी उदारता से प्रभावित करने का प्रयास करता है। ऐसी उदारता पंजाबी विवाहों में प्रकट होती है। यहाँ खुशी के अवसर पर महिलाओं को हंसी-ठिठोली करने की स्वतंत्रता मिलती है। वे संबंधियों का, विचोलिए का, जीजा का और अन्य रिश्तेदारों का गालियों से स्वागत करती हैं। पूरी रात गाकर ताने दे सकती हैं। ऐसा करते हुए वे गाकर सिठणीयां देती हैं और एक दिन की महारानियाँ बन जाती हैं। परंतु धर्म को यह एक दिन की छूट भी स्वीकार नहीं होती। वह पुरुष प्रधान समाज को पूरी सख्ताई से लागू करके अपने धार्मिक गीत गाने का हुक्म देता है। सिंह सभा की तरफ से बीसवीं सदी की शुरुआत

में इन गीतों के खिलाफ मुहीम चलाई गई। सिंह सभा के ऐसे दबाब के बाबजूद औरतों ने उनके इस मंसूबे को स्वीकार नहीं किया। बल्कि और सख्ती से वे उनके खिलाफ सिठणीयां कहने लगीं।"

"टोली बापू सिंह सभीए
मैनूं मंनणे ना पैण जठेरे
टोले धीए सिंह सभीए
खुल्ले केस गल्लां दे विच पैंदे
मर जाण सिंह सभीए
जेहड़े गिद्धा पाउण ना दिंदे
मर जाण सिंह सभीए"[3]

इसी प्रकार दलित जातियों से संबधित लोकगीतों में भी सवर्णों द्वारा दलितों का प्रतिरोध अथवा दलितों द्वारा सवर्णों का प्रतिरोध दिखाई देता है।

जैसे एक लोकगीत में-

"राजे खूह लवाया हो छीबण पाणी नूँ आई आ
छीबण ने दोल बहाया हो राजे पलड़ा फड़ लिया ए

गीत की शुरुआती पंक्तियों से ही समझ में आता है कि इसमें एक कथा है या कोई वृतांत गीत है। इन पंक्तियों में एक समाज (जागीरदारी-पंजाबी समाज) के दो वर्ग आमने सामने हैं। राजा उच्च वर्ग का प्रतिनिधि है जबकि छींबण निम्न वर्ग की प्रतिनिधि है। उच्च जाति का पुरुष निम्न जाति की स्त्री से विवाह करता है, उसकी पत्नी दलित स्त्री का विरोध करती है अत: अंत में उसे मार देती है।

कई बार राजनैतिक सामाजिक घटनाएँ इतनी अधिक प्रभावशाली होती हैं कि लोक मन से लोकगीतों की गूँज स्पष्ट सुनी जा सकती है ऐसे लोकगीतों के अध्ययन से ही हम किसी समाज विशेष के इतिहास को समझने का

[3] संह,कर्मजीत.(2009) लोक गीतां दे नाल-नाल, पृ.सं.79

प्रयास करते हैं। उपरोक्त लिखित गीत के माध्यम से हमने मुगलों के अत्याचारों का विरोध करने वाले सिख समुदाय के बारे में जानने का प्रयास किया।

मुग़ल गया पाणीए नूँ, कीता दीवे दा काज

दीवे दी वत्ती ला के सड मोई, रक्खी राजे दी लाज

भारत-पाक विभाजन के दौरान ऐसी बहुत सी घटनाएँ सामने आई, जिनमें स्त्रियों ने सामूहिक आत्महत्या कर ली। भारत में जौहार का भी इतिहास है। आक्रमणकारी राजाओं से बचने के लिए स्त्रियों ने सामूहिक जौहार भी किया। इस लोकगीत के माध्यम से हम इतिहास के ठीक समानांतर बह रही लोकधारा में भी इस तरह का प्रतिरोध देखते हैं। पंजाबी लोकगीतों में जिस तरह अंग्रेजों का प्रतिकार करते लोककाव्य है उसके कई रूप देखने को मिलते हैं। ठीक वैसे ही मुगलों के प्रतिकार में भी लोककाव्य की कई सतरें (पंक्तियाँ) अस्तित्व में आई।

मुगलों के इस प्रतिकार के पश्चात अंग्रेजों के प्रतिकार से संबंध लोककाव्य प्राप्त होता है। जिसमें गाड़ियों, बिजली, मोटरों, साइकिलों, नौकर, पति, फौजियों आदि का वर्णन दिखाई देता है। जिसमें प्रतिकार के अनेकों स्वर हैं। गांधी जी और भगत सिंह से संबंधित गीतों में महिलाएं गांधी और भगत सिंह के पक्ष में खड़ी होकर अंग्रेजों को देश छोड़ने की चेतावनी देते हुए दिखाई देती हैं। अंग्रेजों के प्रति प्रतिरोध के लोककाव्य में स्त्रियाँ अंग्रेजी व्यवस्था का विरोध करती हैं। एक लोकगीत में वे अंग्रजों द्वारा चलाए गए पैसे का विरोध करते हुए कहती हैं कि *(राज फिरंगीयां दा/ देखो तुर पए गिल्ट दे आने।)* अब तो हर चीज पैसे से मिलेगी देखो इन फिरंगियों ने गिल्ट धातू के पैसे चला दिए हैं।

दूसरे लोक गीत में स्त्री अंग्रेज के अधीन नौकरी करने वाले अपने पति से नौकरी छोड़ देने के लिए कहती है। अंग्रेज को संबोधित करती है कि अविवाहितों को नौकरी पर रखें ताकि विवाहितों के घर ठीक से चल पाएं। क्योंकि अंग्रेज अपने नौकरों को छुट्टी नहीं देते ऐसे में उनकी पत्नियाँ अकेली रह जाती हैं।

नौकर रख लै छड़े कुआरे/ चंद चढा के चढ़ी आ चुबारे/ देखां किते जानी नजर ना आवे/ साड़ा सब्र फिरंगीयां नूँ मारे/ ना दिंदा छुट्टीयां, ना तलबां तारे/ नौकर रख लै तूं छड़े ते कुआरे/ ना होण रंना ना पैण पुआड़े

अंग्रेजों ने बड़ी संख्या में सिखों को फ़ौज में शामिल किया था क्योंकि शारीरिक बलिष्ठता के चलते वे मजबूती से युद्ध में हिस्सा ले सकते थे। 'सिक्ख लांसर्स एंड इन्फेंटरी रेजिमेंट' में भर्ती करके अंग्रेजों ने बहुत से सिखों को लंदन भेजा था। समय-समय पर फ़ौज में भर्ती करके अंग्रेजों ने सिखों को अपने बसाए अन्य उपनिवेशों में भेजा। जिसके चलते उनकी पत्नियां अकेली रह गई, उनके इसी एकांत से लोकगीत अस्तित्व में आए। जिनमें स्त्रियों ने अंग्रजों का प्रतिरोध तो किया ही साथ ही अपने एकांत और कहीं-कहीं सास-ससुर और ननद के अत्याचारों का भी विरोध करती स्त्रियाँ दिखाई देती हैं।

लंबे समय के बाद वापिस आने वाले पति से शिकायत करती स्त्री कई लोकगीतों में यह भी कहती दिखाई देती है, *'यदि तुम नौकरी के लिए दूर जाना चाहते हो तो चले जाओ लेकिन मैं अपनी दैहिक इच्छाओं का क्या करूँ, तब पति उसे कहता है कि देवर के साथ अपनी दैहिक इच्छाएं पूरी कर लो। वह कहती है देवर बहुत छोटा है तब वह कहता है कि जेठजी के साथ अपनी दैहिक इच्छाएं पूरी कर लो,पत्नी कहती है वह भी मेरी उम्र से बड़ा है। तब पति कहता है फिर अपनी दैहिक इच्छाओं को ख़त्म करने का प्रयास करो।'*

पंजाबी लोकगीतों स्त्री अपनी दैहिक आवश्यकताओं को नि:संकोच रखती है। पंजाब में पति की मृत्यु के बाद उसकी विधवा पत्नी का विवाह देवर अथवा जेठ से कर दिया जाता है। जिसे करेवा प्रथा के नाम से जाना जाता है ताकि वह सामाजिक उपेक्षाओं की शिकार न हो। इससे संबंधित लोकगीत भी दिखाई देते हैं और कहीं-कहीं वह इस प्रक्रिया को नकारती भी है। विरोध करते हुए तर्क देती है और कहीं-कहीं स्वीकार करती नजर आती है। अत: इस लघु शोध में शोधकर्ता द्वारा चुनिन्दा लोकगीतों को शामिल करते हुए अध्ययन करने का प्रयास किया है। इस शोध को विस्तृत करने के लिए उन सभी लोकगीतों को इसमें शामिल किया जा सकता है जिनमें प्रतिरोध का स्वर अधिक तीक्ष्ण है।

हिंदी में पंजाबी लोकगीतों पर कम ही सामग्री उपलब्ध है ऐसे में पंजाबी से हिंदी में अनुवाद अथवा लिप्यंतरण के माध्यम से यह शोध दो भाषाओं के शोधार्थीयों के लिए उपयोगी है । प्रतिरोध की संस्कृति के विश्लेषण के माध्यम से प्रस्तावित शोध तुलनात्मक साहित्य के लिए अध्ययन सामग्री निर्माण की दृष्टि से भी उपयोगी है।

Think India (Quarterly Journal)
ISSN: 0971-1260 Vol-22, Special Issue-06
International Conference on Indigenous Languages and Translation Studies
held on Saturday, 3rd August 2019
Venue- Seminar Hall, **School of Humanities and Social Sciences**, Jain Deemed-to-be-University, Palace Road, Bengaluru, India

- निष्कर्ष:प्रस्तुत शोध में प्रतिरोध की परंपरा के लोकगीतों को शा मल करने का प्रयास कया गया है और उनका लप्यंतरण और वश्लेषण प्रस्तुत कया है।जिनमें कुछ गीतों का संग्रह युट्यूब अथवा उपलब्ध ऑ डयो कैसेट्स से कया है।अत: कुछ लोकगीतों का संग्रह मौ खक आधार पर कया गया है।पंजाबी लोकगीतों में प्रतिरोध का तीक्ष्ण स्वर मलता है यह प्रतिरोध कई स्तरों पर दिखाई देता है जिसे इस शोध में कुछ बिंदुओं में वभक्त कया गया है जैसे: प्रशासनिक और राजनैतिक व्यवस्था से संबंधित लोकगीत (मुगलों के प्रति प्रतिरोध के लोकगीत, अंग्रेजों के प्रति प्रतिरोध के लोकगीत आदि) को शामिल किया है।
- लोकनायकों से संबंधित प्रतिरोध का लोककाव्य (जीणा मौड, दुर्गा डाकू, मौड़, उजागर, वतनू डाकू, सुच्चा सिंह, बाबा नाहर सिंह आदि) को शामिल किया है।
- आजादी के नायकों से संबंध लोकगीत (भगत सिंह से संबंधी लोकगीत, गांधी से संबंधी लोकगीत)
- सामाजिक रीति-रिवाजों, कुप्रथाओं के प्रति प्रतिरोध (बाल विवाह एंव जातिवाद आदि)
- स्त्रियों के प्रतिरोध संबंधी लोक काव्य : विवाहेतर प्रेम संबंधो के स्वीकार और प्रतिकार संबंधी लोकगीत
- शराबबंदी संबंधी लोकगीत
- सिंह सभा के विरोध में गए जाने वाले लोक गीत
- इंदिरा गांधी के विरोध संबंधी लोकगीत आदि

प्रस्तुत शोध में इन लोकगीतों का हिंदी लिप्यंतरण करने के पश्चात लोकगीतों में मौजूद प्रतिरोध के स्वर को तलाशते हुए उसका विश्लेषण किया गया है हालांकि प्रस्तुत शोध में कम लोकगीतों को शामिल किया है परंतु इन लोकगीतों के माध्यम से लोक परंपरा के सभी पक्षों को छूने का प्रयास किया गया है।

शोध के दौरान निष्कर्षत: हम कह सकते हैं कि पंजाब में दूसरे क्षेत्रों की अपेक्षा प्रतिरोध का अधिक तीव्र स्वर दिखाई देता है।जिनमें क्षेत्रीयता दिखाई देती है।लगभग सभी लोकगीत कृषि व्यवस्था से संबंधित हैं।इसके अलावा विदेशी हमालाकारों के प्रतिरोध संबंधी लोकगीतों में तीखा स्वर दिखाई देता

है।तात्कालिक सरकार के प्रति आक्रोश और आजादी के नायकों के जोश, उत्साह कुर्बानी के गीत आदि इन लोक्काव्यों का हिस्सा हैं।

पंजाब में माझा,मालवा और दोआबा के लोकगीतों में थोड़ा बहुत भाषाई अंतर दिखाई देता है।दोआबा में

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :

१. सिंहगुरदयाल, पंजाब दी लोकधारा अते जीवन,दिल्ली:नवयुग पब्लिकेशन(1988)
२. गुरदित्त सिंह,मेरा पिंड,साहित्य प्रकाशन,चंडीगढ़(1981)
३. गुरदियाल सिंह,पंजाब के त्योहार और मेले,प्रकाशन विभाग,भारत सरकार,नई दिल्ली(1986)
४. जसविंदर सिंह,पंजाबी लोक साहित्य शास्त्र,पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला(1987)